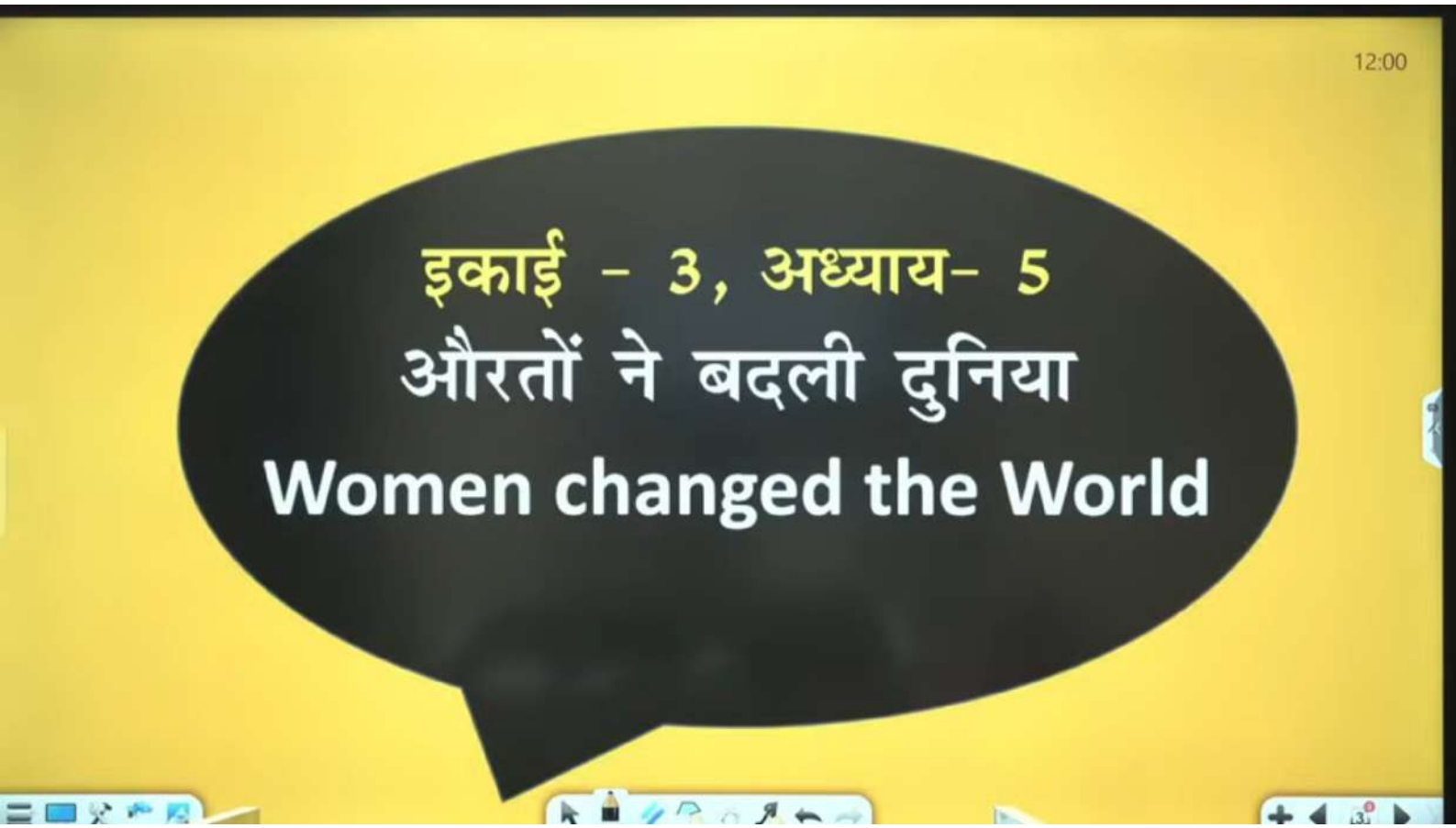
12:00
इकाई - 3, अध्याय- 5
औरतों ने बदली दुनिया
Women changed the World

औरतों ने बदली दुनिया

पिछले अध्याय में हमने देखा कि किस तरह महिलाओं द्वारा किया जाने वाला घर का काम, काम ही नहीं माना जाता है। हमने यह भी पढ़ा कि घरेलू काम और परिवार के सदस्यों की देखभाल करना पूरे समय का काम है और इस कार्य को प्रारंभ और समाप्त करने का कोई निश्चित समय भी नहीं है। इस अध्याय में हम घर के बाहर के कामों को देखेंगे और समझेंगे कि कैसे कुछ व्यवसाय महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों के लिए अधिक उपयुक्त समझे जाते हैं। हम यह भी ज्ञात करेंगे कि समानता प्राप्त करने के लिए स्त्रियों ने कैसे संघर्ष किए। पहले भी और आज भी शिक्षा प्राप्त करना एक ऐसा तरीका है, जिससे महिलाओं के लिए नए अवसर निर्मित किए जा सकते हैं। साथ ही इस अध्याय में हम हाल के वर्षों में महिला आंदोलनों द्वारा भेदभाव को चुनौती देने के लिए किए जाने वाले विभिन्न प्रकार के प्रयत्नों के बारे में भी संक्षेप में जानेंगे।

Women Change the World

In the previous chapter, we saw how women's work in the home is not recognised as work. We also read how doing household work and taking care of family members is a full time job and there are no specific hours at which it begins or ends. In this chapter, we will look at work outside the home, and understand how some occupations are seen to be more suitable for men than for women. We will also learn about how women struggle for equality. Getting an education was, and still is, one way in which new opportunities were created for women. This chapter will also briefly trace the different types of efforts made by the women's movement to challenge discrimination in more recent years.

NCERT class - VII - Polity - KHAN Global Studies

By : Karan Sir

12:05

भारत में 83.6 प्रतिशत महिलाएँ खेतों में काम करती हैं। उनके काम में पौधे रोपना, खरपतवार निकालना, फ़सल काटना और कटाई करना शामिल हैं। फिर भी जब हम किसान के बारे में सोचते हैं, तो हम एक पुरुष के बारे में ही सोचते हैं।

(स्रोत – 61वाँ नेशनल सैंपल सर्वे, 2004-05)

83.6 per cent of working women in India are engaged in agricultural work. Their work includes planting, weeding, harvesting and threshing. Yet, when we think of a farmer we only think of a man.

Source: NSS 61st Round (2004-05)

4:52/1:31:51

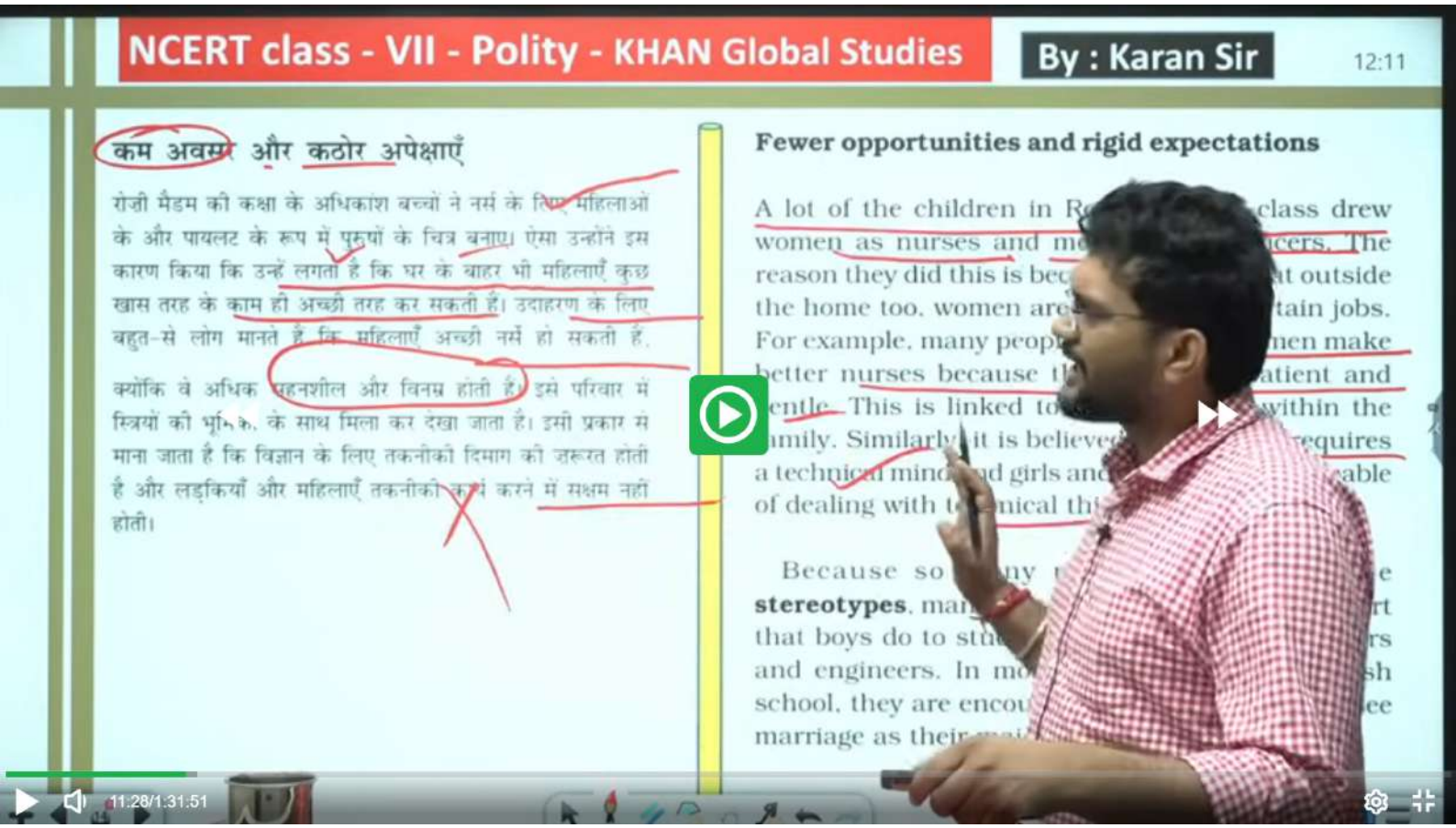

NCERT class - VII - Polity - KHAN Global Studies
By : Karan Sir
12:11
कम अवसर और कठोर अपेक्षाएँ
रोज़ी मैडम की कक्षा के अधिकांश बच्चों ने नर्स के लिए महिलाओं के और पायलट के रूप में पुरुषों के चित्र बनाए। ऐसा उन्होंने इस कारण किया कि उन्हें लगता है कि घर के बाहर भी महिलाएँ कुछ खास तरह के काम ही अच्छी तरह कर सकती हैं। उदाहरण के लिए बहुत-से लोग मानते हैं कि महिलाएँ अच्छी नर्सें हो सकती हैं,
क्योंकि वे अधिक सहनशील और विनम्र होती हैं। इसे परिवार में स्त्रियों की भूमिका के साथ मिला कर देखा जाता है। इसी प्रकार से माना जाता है कि विज्ञान के लिए तकनीकी दिमाग की ज़रूरत होती है और लड़कियाँ और महिलाएँ तकनीकी कार्य करने में सक्षम नहीं होती।
Fewer opportunities and rigid expectations
A lot of the children in R class drew
women as nurses and m cers. The
reason they did this is bec at outside
the home too, women are tain jobs.
For example, many peop men make
better nurses because t atient and
entle. This is linked to within the
mily. Similarly it is believe requires
a techni mind d girls and able
of dealing with t mical th
Because so ny
stereotypes, man rt
that boys do to stu rs
and engineers. In mo sh
school, they are encou ee
marriage as their
11:28/1:31:51

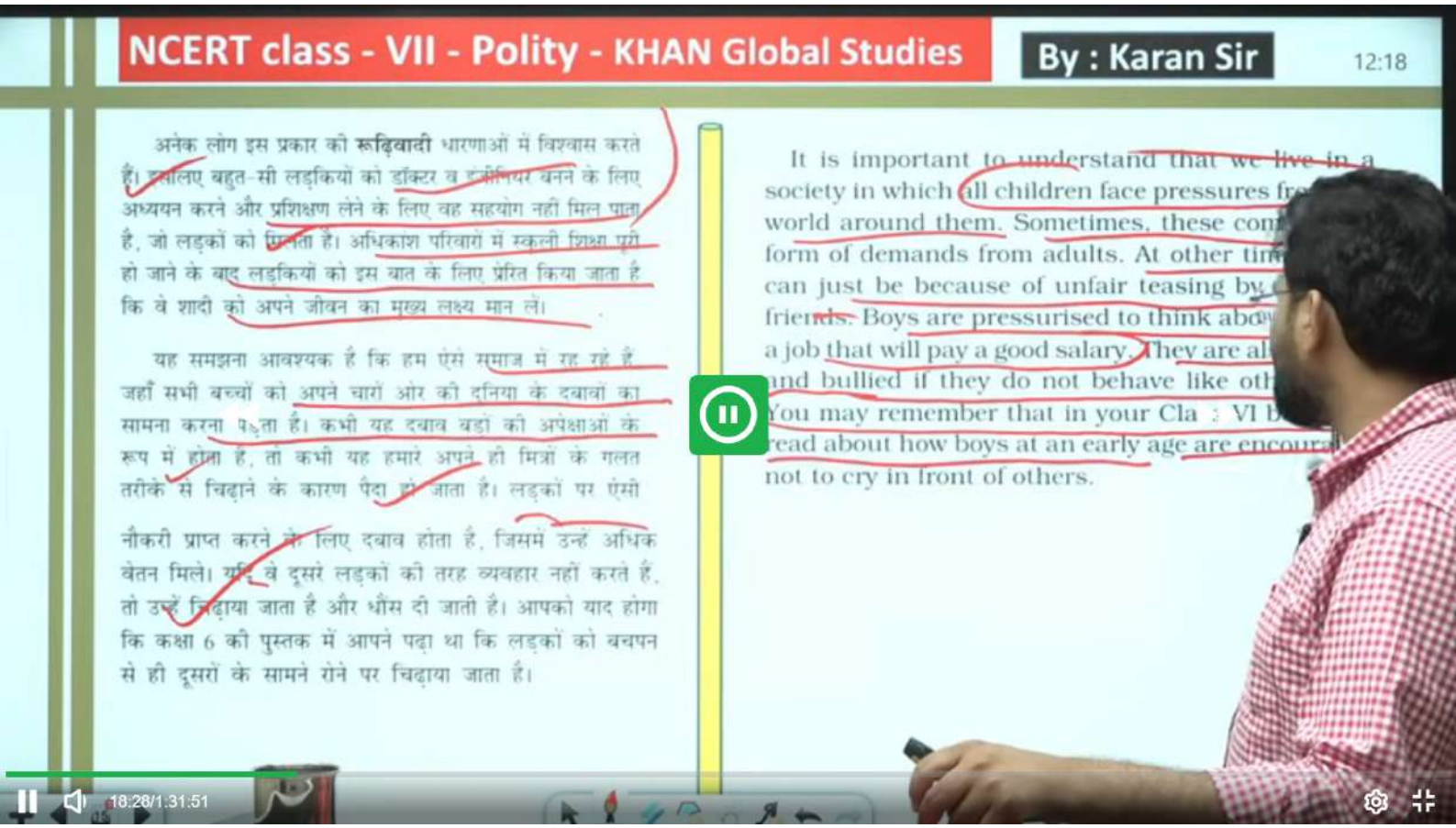

NCERT class - VII - Polity - KHAN Global Studies

By : Karan Sir

12:18

अनेक लोग इस प्रकार की **रूढ़िवादी** धारणाओं में विश्वास करते हैं। इसलिए बहुत-सी लड़कियों को डॉक्टर व इंजीनियर बनने के लिए अध्ययन करने और प्रशिक्षण लेने के लिए वह सहयोग नहीं मिल पाता है, जो लड़कों को मिलता है। अधिकांश परिवारों में स्कूली शिक्षा पूरी हो जाने के बाद लड़कियों को इस बात के लिए प्रेरित किया जाता है कि वे शादी को अपने जीवन का मुख्य लक्ष्य मान लें।

यह समझना आवश्यक है कि हम ऐसे समाज में रह रहे हैं जहाँ सभी बच्चों को अपने चारों ओर की दुनिया के दबावों का सामना करना पड़ता है। कभी यह दबाव बड़ों की अपेक्षाओं के रूप में होता है, तो कभी यह हमारे अपने ही मित्रों के गलत तरीके से चिढ़ाने के कारण पैदा हो जाता है। लड़कों पर ऐसी नौकरी प्राप्त करने के लिए दबाव होता है, जिसमें उन्हें अधिक वेतन मिले। यदि वे दूसरे लड़कों की तरह व्यवहार नहीं करते हैं, तो उन्हें चिढ़ाया जाता है और धौंस दी जाती है। आपको याद होगा कि कक्षा 6 की पुस्तक में आपने पढ़ा था कि लड़कों को बचपन से ही दूसरों के सामने रोने पर चिढ़ाया जाता है।

It is important to understand that we live in a society in which all children face pressures fr
world around them. Sometimes, these com
form of demands from adults. At other tim
can just be because of unfair teasing by
friends. Boys are pressurised to think abo
a job that will pay a good salary. They are al
and bullied if they do not behave like oth
You may remember that in your Cla : VI b
read about how boys at an early age are encour
not to cry in front of others.

18:28/1:31:51

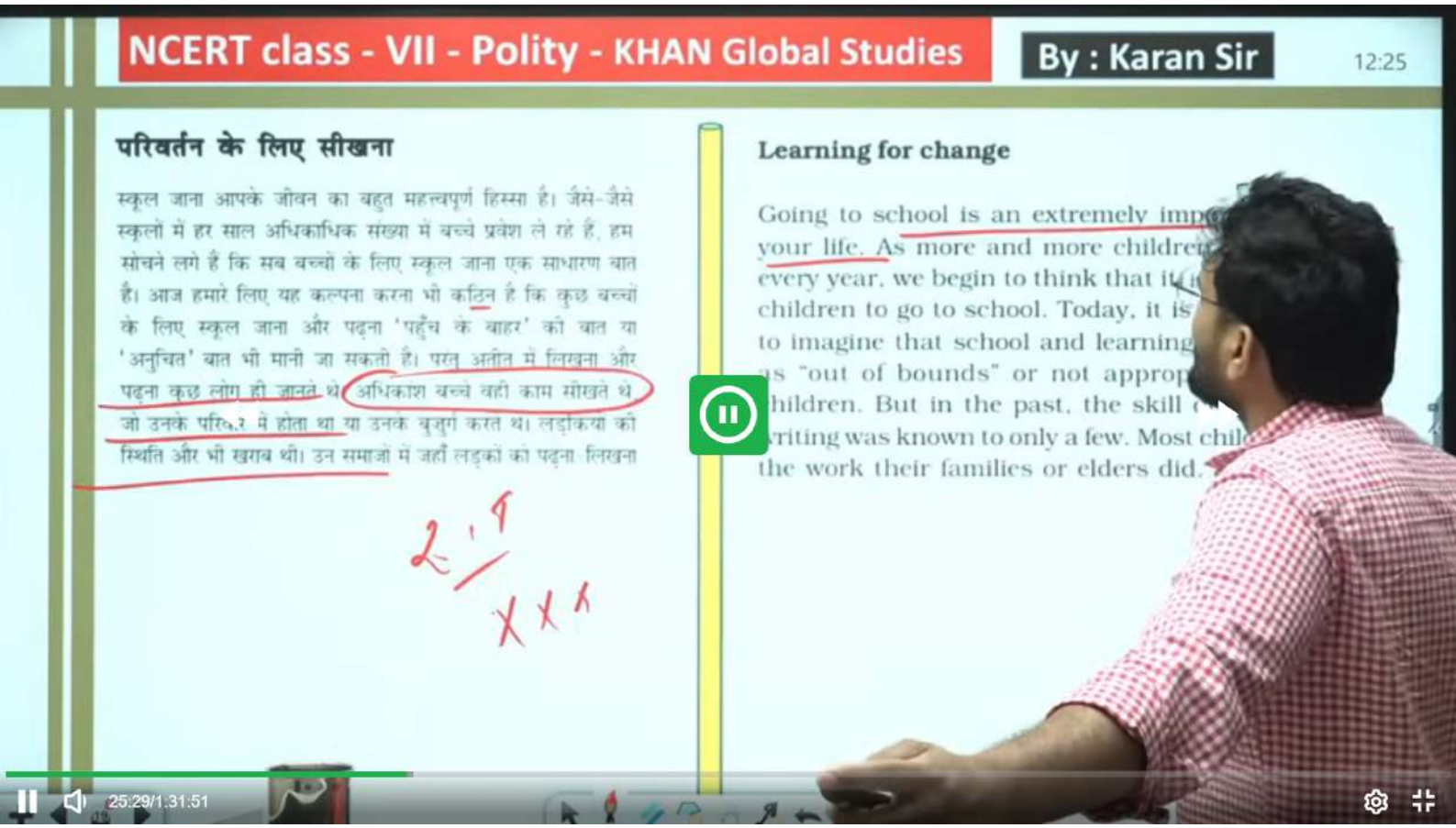
NCERT class - VII - Polity - KHAN Global Studies
By : Karan Sir
12:25
परिवर्तन के लिए सीखना
स्कूल जाना आपके जीवन का बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा है। जैसे-जैसे स्कूलों में हर साल अधिकाधिक संख्या में बच्चे प्रवेश ले रहे हैं, हम सोचने लगे हैं कि सब बच्चों के लिए स्कूल जाना एक साधारण बात है। आज हमारे लिए यह कल्पना करना भी कठिन है कि कुछ बच्चों के लिए स्कूल जाना और पढ़ना 'पहुँच के बाहर' की बात या 'अनुचित' बात भी मानी जा सकती है। परंतु अतीत में लिखना और पढ़ना कुछ लोग ही जानते थे। अधिकांश बच्चे वही काम सीखते थे जो उनके परिवार में होता था या उनके बुजुर्ग करते थे। लड़कियों की स्थिति और भी खराब थी। उन समाजों में जहाँ लड़कों को पढ़ना लिखना
Learning for change
Going to school is an extremely impo
your life. As more and more children
every year, we begin to think that it
children to go to school. Today, it is
to imagine that school and learning
as "out of bounds" or not appro
children. But in the past, the skill
writing was known to only a few. Most chil
the work their families or elders did.
25:29/1:31:51

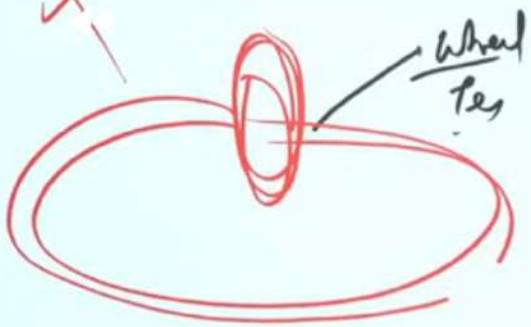

NCERT class - VII - Polity - KHAN Global Studies
By : Karan Sir
12:27
सिखाया जाता था, लड़कियों को अक्षर तक सीखने की अनुमति नहीं थी। यहाँ तक कि उन परिवारों में भी जहाँ कुम्हारी, बुनकरी (वस्त्र बुनना) और हस्तकला सिखाई जाती थी, यह धारणा थी कि लड़कियों और औरतों का काम केवल सहायता करने तक ही सीमित है। उदाहरण के लिए - कुम्हार के व्यवसाय में स्त्रियाँ मिट्टी एकत्र करती थीं और बर्तन बनाने के लिए उसे तैयार करती थीं। चूँकि वे चाक नहीं चलाती थीं, इसलिए उन्हें कुम्हार नहीं माना जाता था।
the work their families or elders did. For girls, the
situation was worse. In communities that taught sons
to read and write, daughters were no
to learn
the alphabet. Even in families
like
pottery, weaving and craft
the
contribution of daughters and w
seen
as supportive. For example, in
ade,
women collected the mud and p
earth
r the pots. But since they did not
heel,
ey were not seen as potters.
27:21/1:31:51

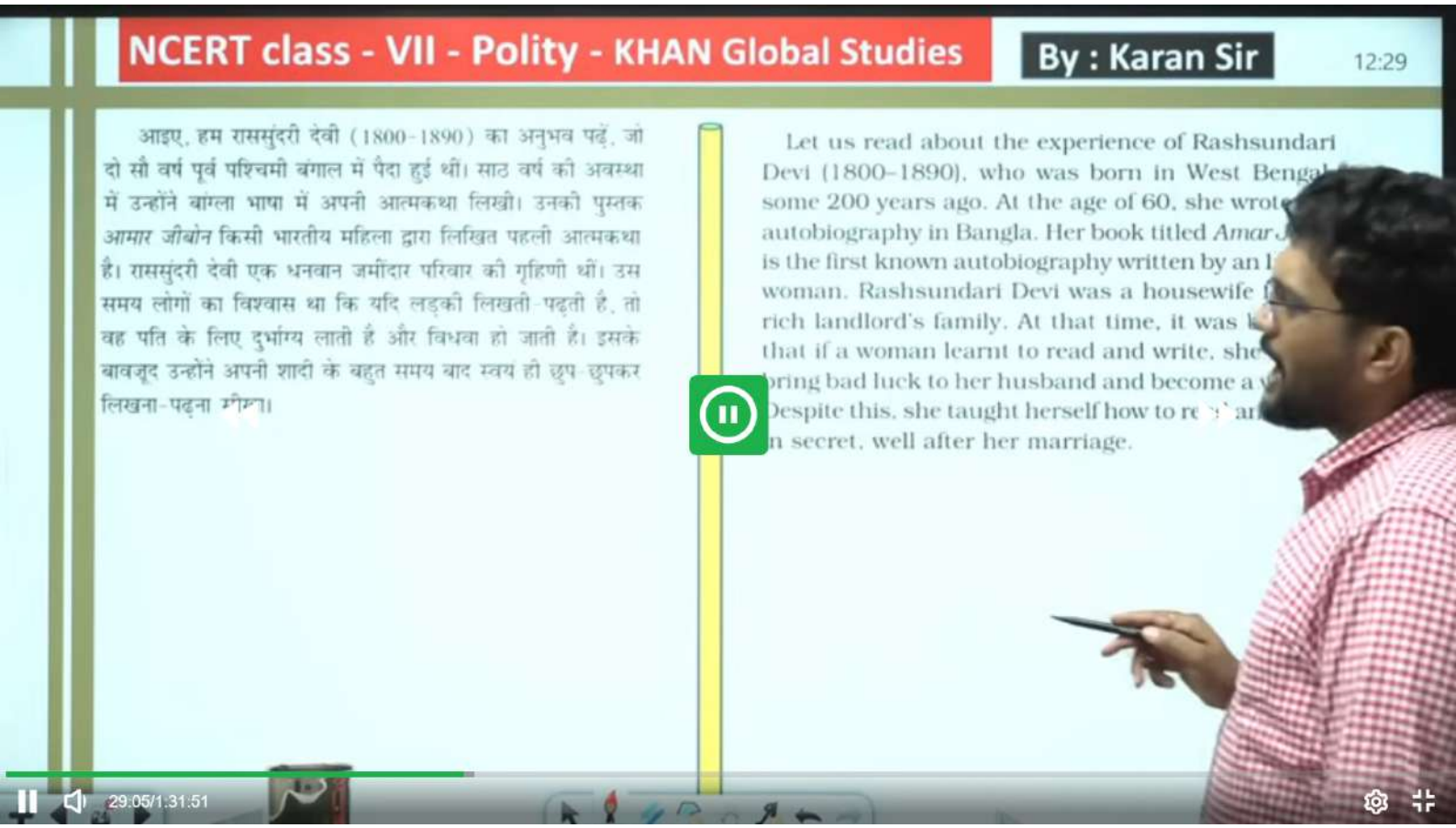
NCERT class - VII - Polity - KHAN Global Studies
By : Karan Sir
12:29
आइए, हम राससुंदरी देवी (1800-1890) का अनुभव पढ़ें, जो दो सौ वर्ष पूर्व पश्चिमी बंगाल में पैदा हुई थीं। साठ वर्ष की अवस्था में उन्होंने बांग्ला भाषा में अपनी आत्मकथा लिखी। उनकी पुस्तक *आमार जीबोन* किसी भारतीय महिला द्वारा लिखित पहली आत्मकथा है। राससुंदरी देवी एक धनवान जमींदार परिवार की गृहिणी थीं। उस समय लोगों का विश्वास था कि यदि लड़की लिखती-पढ़ती है, तो वह पति के लिए दुर्भाग्य लाती है और विधवा हो जाती है। इसके बावजूद उन्होंने अपनी शादी के बहुत समय बाद स्वयं ही छुप-छुपकर लिखना-पढ़ना सीखा।
Let us read about the experience of Rashsundari Devi (1800–1890), who was born in West Benga
some 200 years ago. At the age of 60, she wrote
autobiography in Bangla. Her book titled *Amar J*
is the first known autobiography written by an I
woman. Rashsundari Devi was a housewife
rich landlord's family. At that time, it was
that if a woman learnt to read and write, she
bring bad luck to her husband and become a
Despite this, she taught herself how to re
n secret, well after her marriage.
29:05/1:31:51

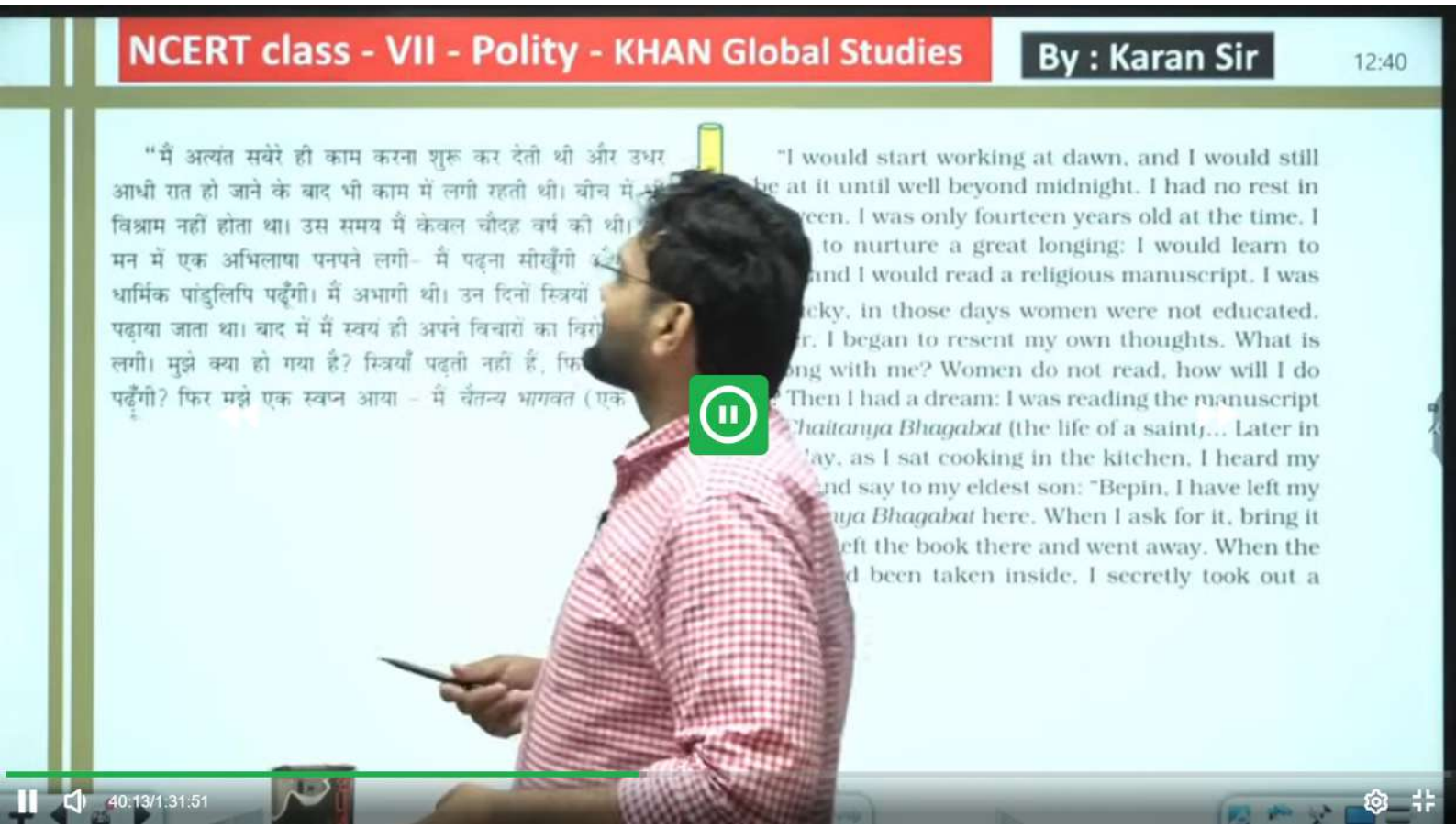
NCERT class - VII - Polity - KHAN Global Studies
By : Karan Sir
12:40
"मैं अत्यंत सबेरे ही काम करना शुरू कर देती थी और उधर
आधी रात हो जाने के बाद भी काम में लगी रहती थी। बीच में
विश्राम नहीं होता था। उस समय मैं केवल चौदह वर्ष की थी।
मन में एक अभिलाषा पनपने लगी- मैं पढ़ना सीखूँगी
धार्मिक पांडुलिपि पढ़ूँगी। मैं अभागी थी। उन दिनों स्त्रियां
पढ़ाया जाता था। बाद में मैं स्वयं ही अपने विचारों का विरो
लगी। मुझे क्या हो गया है? स्त्रियाँ पढ़ती नहीं हैं, फि
पढ़ूँगी? फिर मुझे एक स्वप्न आया – मैं चैतन्य भागवत (एक
"I would start working at dawn, and I would still
be at it until well beyond midnight. I had no rest in
ween. I was only fourteen years old at the time. I
to nurture a great longing: I would learn to
and I would read a religious manuscript. I was
icky, in those days women were not educated.
r. I began to resent my own thoughts. What is
ong with me? Women do not read, how will I do
Then I had a dream: I was reading the manuscript
Chaitanya Bhagabat (the life of a saint)... Later in
day, as I sat cooking in the kitchen, I heard my
nd say to my eldest son: "Bepin, I have left my
nya Bhagabat here. When I ask for it, bring it
eft the book there and went away. When the
d been taken inside, I secretly took out a
40:13/1:31:51

12:40
आइए, हम राससुंदरी देवी (1800-1890) का अनुभव पढ़ें, जो दो सौ वर्ष पूर्व पश्चिमी बंगाल में पैदा हुई थीं। साठ वर्ष की अवस्था में उन्होंने बांग्ला भाषा में अपनी आत्मकथा लिखी। उनकी पुस्तक *आमार जीबोन* किसी भारतीय महिला द्वारा लिखित पहली आत्मकथा है। राससुंदरी देवी एक धनवान जमींदार परिवार की गृहिणी थीं। उस समय लोगों का विश्वास था कि यदि लड़की लिखती-पढ़ती है, तो वह पति के लिए दुर्भाग्य लाती है और विधवा हो जाती है। इसके बावजूद उन्होंने अपनी शादी के बहुत समय बाद स्वयं ही छुप-छुपकर लिखना-पढ़ना सीखा।
Let us read about the experience of Rashsundari
Devi (1800–1890), who was born in West Bengal,
some 200 years ago.
of 60, she wrote her
autobiography in
titled *Amar Jiban*
is the first known
tten by an Indian
woman.
housewife from a
rich landlord's
it was believed
that if a woman
write, she would
bring bad luck to
become a widow!
Despite this, she
read and write
in secret, well after
40:11/1:31:51

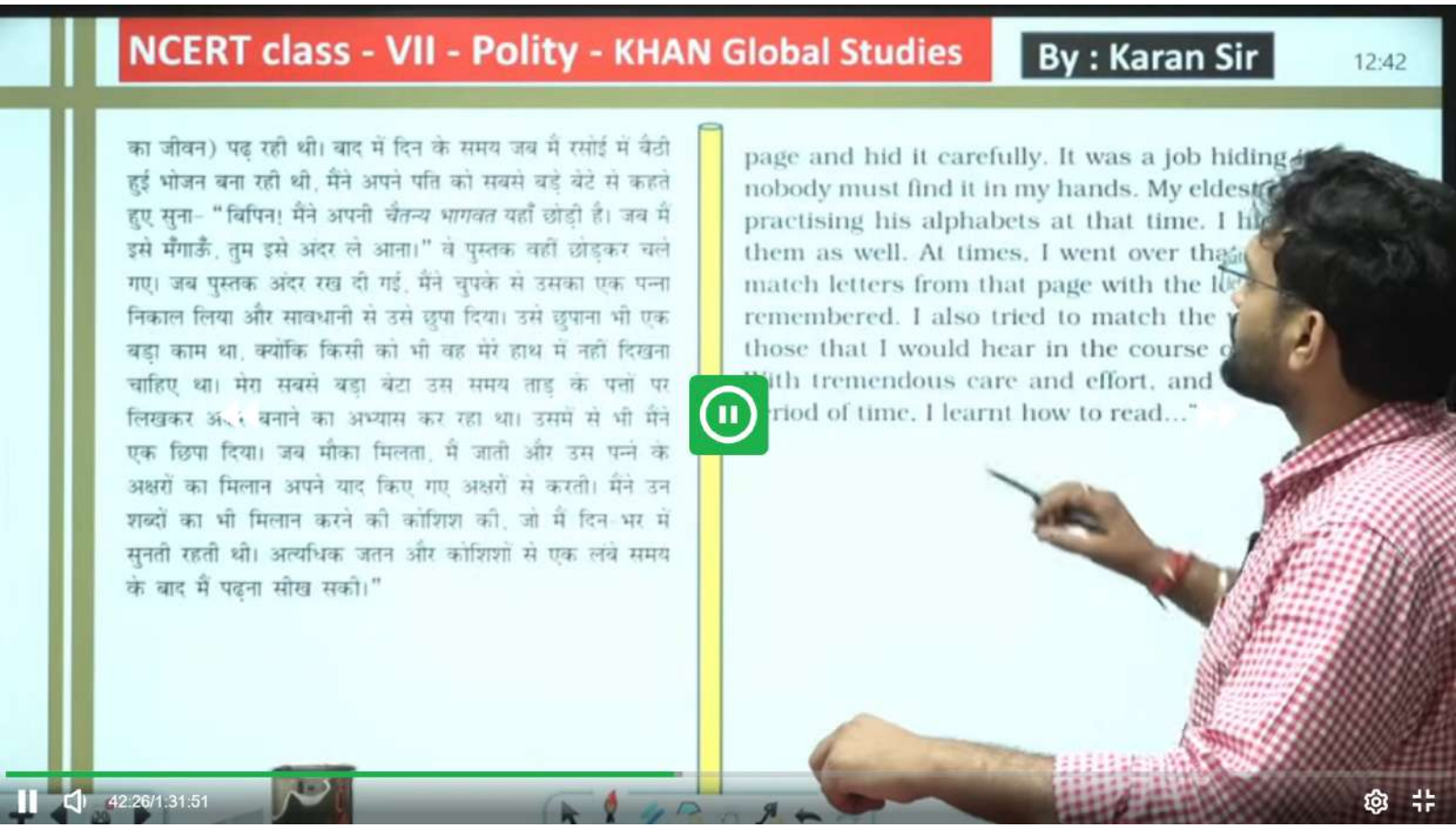

NCERT class - VII - Polity - KHAN Global Studies
By : Karan Sir
12:42
का जीवन) पढ़ रही थी। बाद में दिन के समय जब मैं रसोई में बैठी हुई भोजन बना रही थी, मैंने अपने पति को सबसे बड़े बेटे से कहते हुए सुना- "बिपिन! मैंने अपनी चैतन्य भागवत यहाँ छोड़ी है। जब मैं इसे मँगाऊँ, तुम इसे अंदर ले आना।" वे पुस्तक वहीं छोड़कर चले गए। जब पुस्तक अंदर रख दी गई, मैंने चुपके से उसका एक पन्ना निकाल लिया और सावधानी से उसे छुपा दिया। उसे छुपाना भी एक बड़ा काम था, क्योंकि किसी को भी वह मेरे हाथ में नहीं दिखना चाहिए था। मेरा सबसे बड़ा बेटा उस समय ताड़ के पत्तों पर लिखकर
बनाने का अभ्यास कर रहा था। उसमें से भी मैंने एक छिपा दिया। जब मौका मिलता, मैं जाती और उस पन्ने के अक्षरों का मिलान अपने याद किए गए अक्षरों से करती। मैंने उन शब्दों का भी मिलान करने की कोशिश की, जो मैं दिन भर में सुनती रहती थी। अत्यधिक जतन और कोशिशों से एक लंबे समय के बाद मैं पढ़ना सीख सकी।"
page and hid it carefully. It was a job hiding
nobody must find it in my hands. My eldest
practising his alphabets at that time. I hi
them as well. At times, I went over tha
match letters from that page with the l
remembered. I also tried to match the
those that I would hear in the course
ith tremendous care and effort, and
riod of time. I learnt how to read..."
42:26/1:31:51

NCERT class - VII - Polity - KHAN Global Studies
By : Karan Sir
12:45
रमाबाई (1858-1922) अपनी बेटी के साथ। महिला-शिक्षा की ये योद्धा स्वयं कभी स्कूल नहीं गईं पर अपने माता-पिता से उन्होंने पढ़ना-लिखना सीख लिया। उन्हें पंडिता की उपाधि दी गई, क्योंकि वे संस्कृत पढ़ना-लिखना जानती थीं; जो उस समय की औरतों के लिए बहुत बड़ी उपलब्धि थी। औरतों को तब यह ज्ञान अर्जित करने की अनुमति नहीं थी। उन्होंने 1898 में, पुणे के खेड़गाँव में एक मिशन स्थापित किया जहाँ विधवा स्त्रियों और गरीब औरतों को पढ़ने-लिखने तथा स्वतंत्र होने की शिक्षा दी जाती थी। उन्हें लकड़ी से चीजें बनाने, छापाखाना चलाने जैसी कुशलताएँ भी सिखाई जाती थीं जो वर्तमान में भी लड़कियों को कम ही सिखाई जाती हैं। ऊपर बाएँ हाथ की तरफ छपी तसवीर में उनका छापाखाना दिख रहा है। रमाबाई का मिशन आज भी सक्रिय है।
44:56/1:31:51

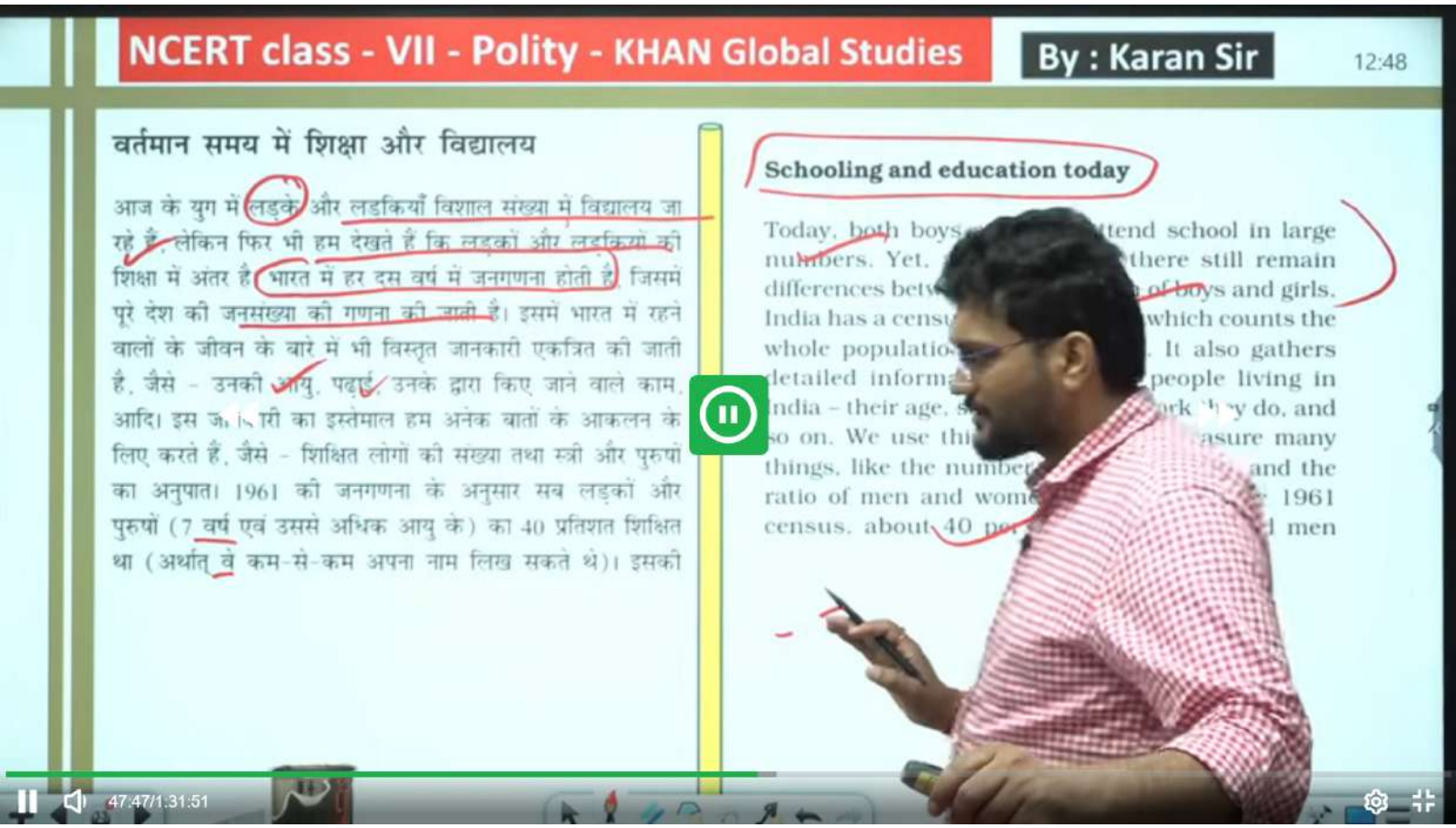

NCERT class - VII - Polity - KHAN Global Studies
By : Karan Sir
12:48
वर्तमान समय में शिक्षा और विद्यालय
आज के युग में लड़के और लड़कियाँ विशाल संख्या में विद्यालय जा
रहे हैं, लेकिन फिर भी हम देखते हैं कि लड़कों और लड़कियों की
शिक्षा में अंतर है। भारत में हर दस वर्ष में जनगणना होती है, जिसमें
पूरे देश की जनसंख्या की गणना की जाती है। इसमें भारत में रहने
वालों के जीवन के बारे में भी विस्तृत जानकारी एकत्रित की जाती
है, जैसे - उनकी आयु, पढ़ाई, उनके द्वारा किए जाने वाले काम,
आदि। इस जा री का इस्तेमाल हम अनेक बातों के आकलन के
लिए करते हैं, जैसे - शिक्षित लोगों की संख्या तथा स्त्री और पुरुषों
का अनुपात। 1961 की जनगणना के अनुसार सब लड़कों और
पुरुषों (7 वर्ष एवं उससे अधिक आयु के) का 40 प्रतिशत शिक्षित
था (अर्थात् वे कम-से-कम अपना नाम लिख सकते थे)। इसकी
Schooling and education today
Today, both boys ttend school in large
numbers. Yet, there still remain
differences betw of boys and girls.
India has a censu which counts the
whole populatio It also gathers
detailed informa people living in
India – their age, y do, and
so on. We use thi asure many
things, like the number and the
ratio of men and wome 1961
census, about 40 men
47:47/1:31:51

तुलना में लड़कियों तथा स्त्रियों का केवल 15 प्रतिशत भाग शिक्षित था। 2011 की जनगणना के अनुसार लड़कों व पुरुषों की यह संख्या बढ़कर 82 प्रतिशत हो गई है और शिक्षित लड़कियों तथा स्त्रियों की संख्या 65 प्रतिशत। इसका आशय यह हुआ कि पुरुषों और स्त्रियों, दोनों के बीच ऐसे लोगों का अनुपात बढ़ गया है, जो पढ़-लिख सकते हैं और जिन्हें कुछ हद तक शिक्षा मिल चुकी है। लेकिन जैसाकि आप देख सकते हैं, अब भी स्त्रियों की तुलना में पुरुषों का प्रतिशत अधिक है। इनके बीच का अंतर अभी समाप्त नहीं हुआ है।

नीचे दी गई तालिका में विभिन्न वर्गों के उन लड़कों व लड़कियों का प्रतिशत [illegible]ा गया है, जो बीच में ही विद्यालय छोड़ देते हैं। [illegible]सूचित जाति (SC) और अनुसूचित जनजाति (ST) के लड़के [illegible]कियाँ इनमें शामिल हैं।

82
65%

(7 years old and above) were literate (that is, they could at least write their names) compared to just 15 per cent of all girls and women. In the most recent census of 2011, these figures have grown to 82 per cent for boys and men, and 65 per cent for girls and women. This means that the proportion of both men and women who are now able to read and have at least some amount of schooling has increased. But, as you can also see, the percentage of the male group is still higher than the female group. The gap has not gone away.

Here is a table that shows the percentage of girls and boys who leave schools from different social groups (2013–14). Scheduled Caste (SC) is the official term for Dalit, and Scheduled Tribe (ST) is the official term for *Adivasi*.

82
68%

49:16/1:31:51

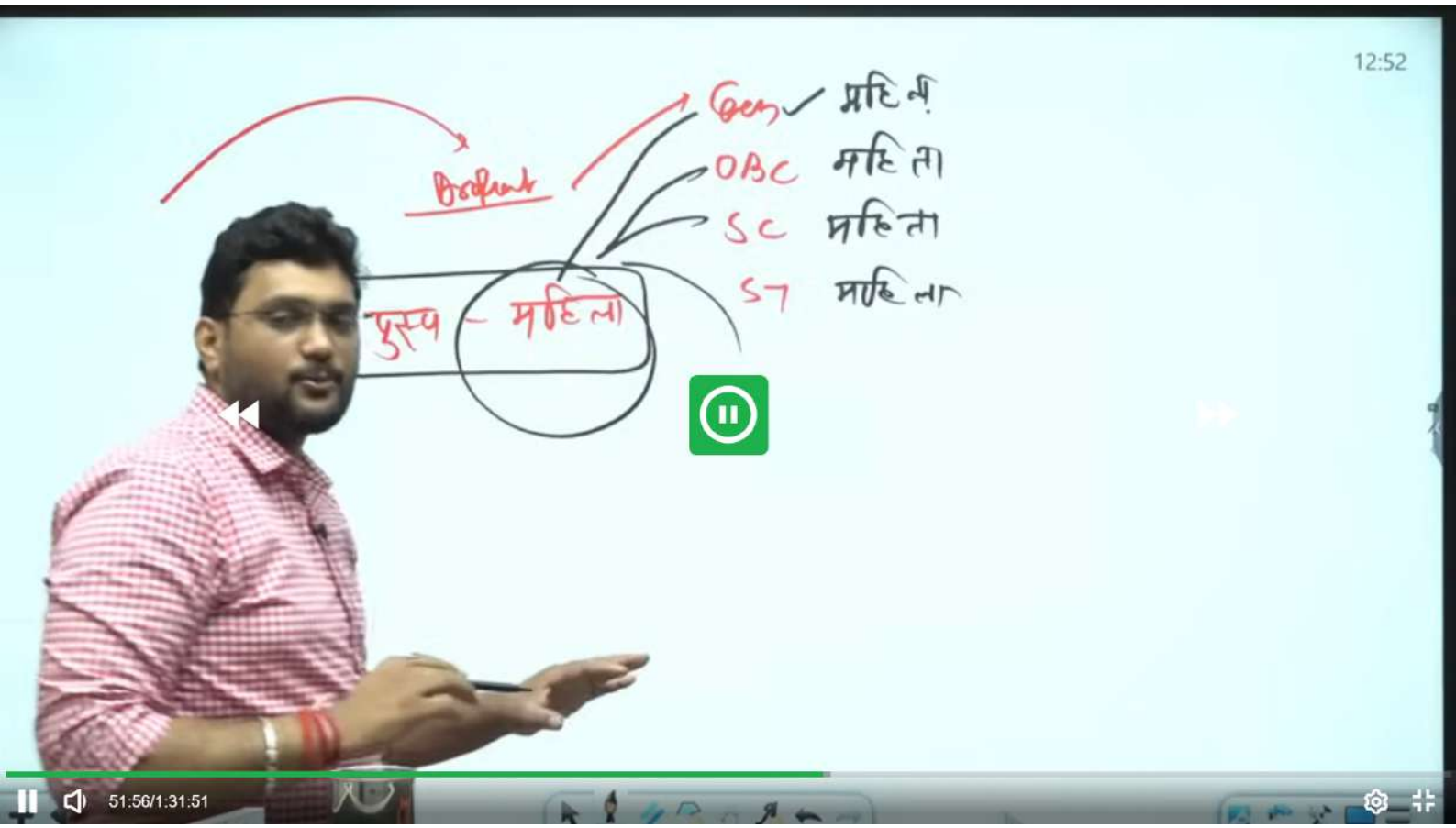

12:52
Gen ✓ महिला
OBC महिला
SC महिला
ST महिला
पुरुष - महिला
51:56/1:31:51

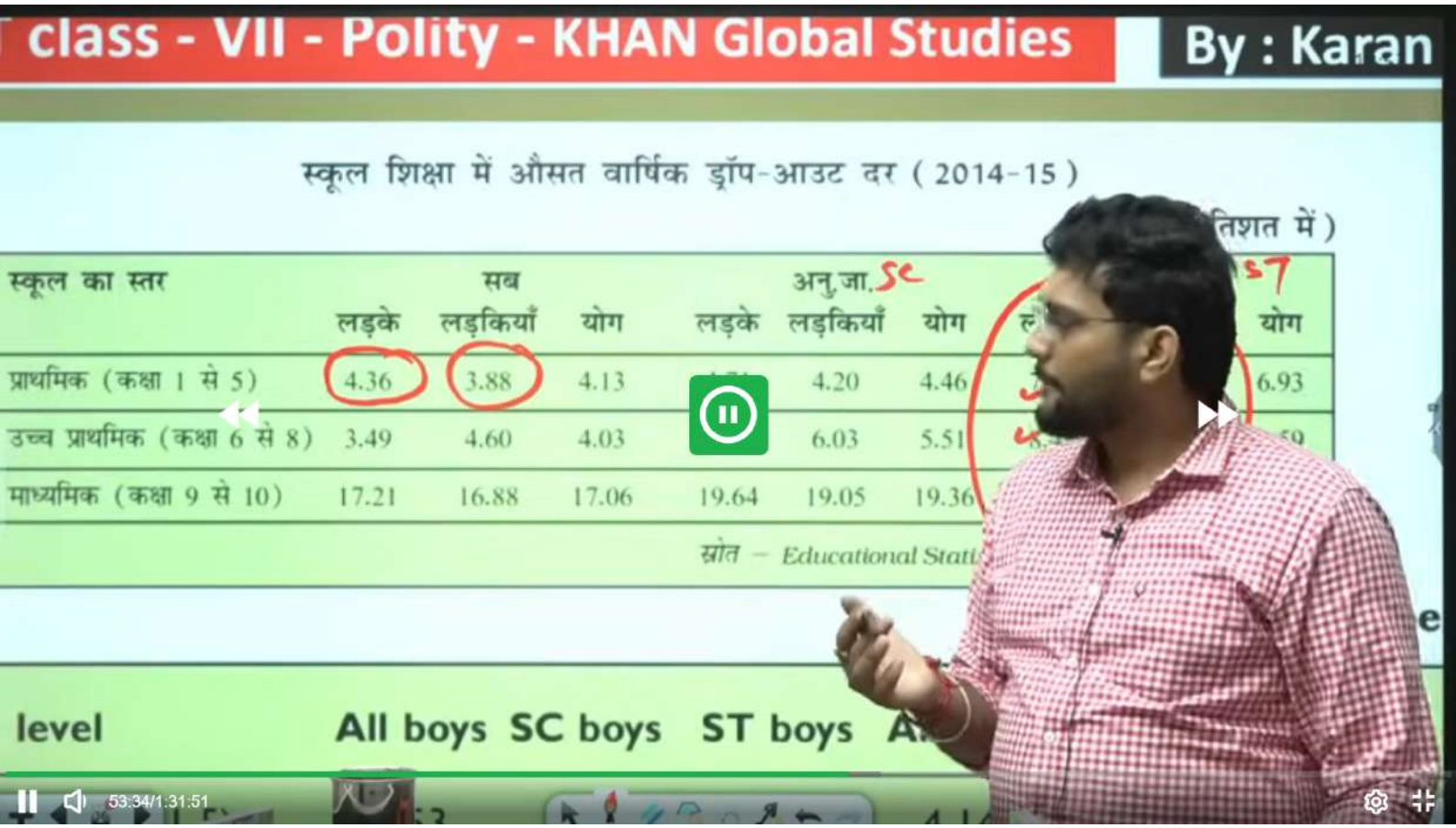

class - VII - Polity - KHAN Global Studies
By : Karan
स्कूल शिक्षा में औसत वार्षिक ड्रॉप-आउट दर (2014-15)
स्कूल का स्तर
सब
अनु.जा.
SC
ST
लड़के
लड़कियाँ
योग
प्राथमिक (कक्षा 1 से 5) 4.36 3.88 4.13 4.20 4.46 6.93
उच्च प्राथमिक (कक्षा 6 से 8) 3.49 4.60 4.03 6.03 5.51
माध्यमिक (कक्षा 9 से 10) 17.21 16.88 17.06 19.64 19.05 19.36
स्रोत — Educational Stati
level
All boys SC boys ST boys
53:34/1:31:51

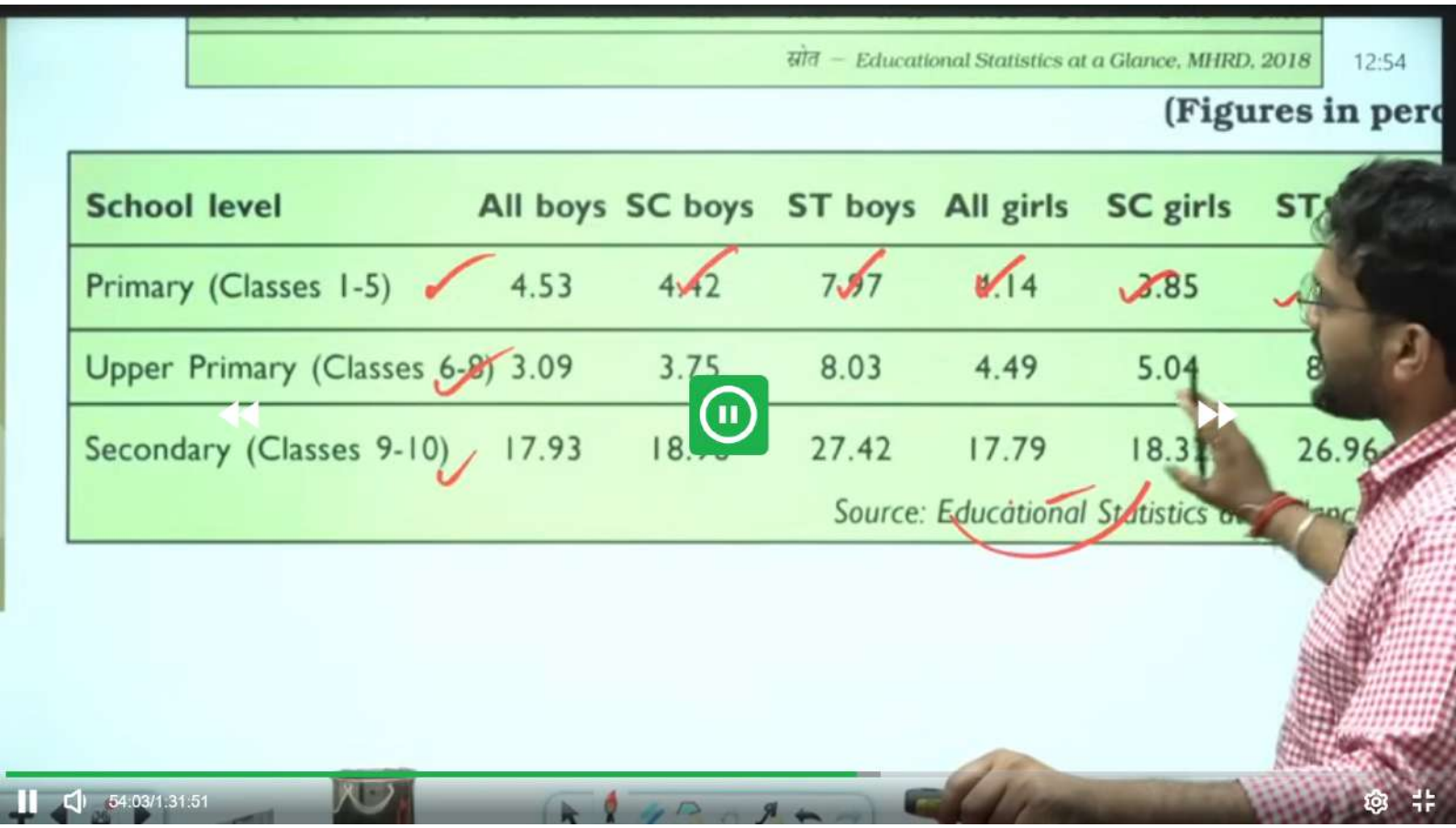
स्रोत – Educational Statistics at a Glance, MHRD, 2018
12:54
(Figures in perc
School level
All boys
SC boys
ST boys
All girls
SC girls
ST
Primary (Classes 1-5)
4.53
4.42
7.97
4.14
3.85
Upper Primary (Classes 6-8)
3.09
3.75
8.03
4.49
5.04
8
Secondary (Classes 9-10)
17.93
27.42
17.79
26.96
Source: Educational Statistics
54:03/1:31:51

दलित, आदिवासी और मुस्लिम वर्ग के बच्चों के स्कूल छोड़ देने के अनेक कारण हैं। देश के अनेक भागों में विशेषकर ग्रामीण और गरीब क्षेत्रों में नियमित रूप से पढ़ाने के लिए न उचित स्कूल हैं, न ही शिक्षक। यदि विद्यालय घर के पास न हो और लाने-ले जाने के लिए किसी साधन जैसे बस या वैन आदि की व्यवस्था न हो तो अभिभावक लड़कियों को स्कूल नहीं भेजना चाहते। कुछ परिवार अत्यंत निर्धन होते हैं और अपने सब बच्चों को पढ़ाने का खर्चा नहीं उठा पाते हैं। ऐसी स्थिति में लड़कों को प्राथमिकता मिल सकती है। बहुत-से बच्चे इसलिए भी स्कूल छोड़ देते हैं, क्योंकि उनके साथ उनके शिक्षक और सहपाठी भेदभाव करते हैं, जैसा कि ओमप्रकाश वाल्मीकि के साथ हुआ।

बेटा

There are several reasons why children from *Dalit*, *Adivasi* and Muslim communities leave school. In many parts of the country, especially in rural and poor areas, there may not even be proper schools nor teachers who teach on a regular basis. If a school is not close to people's homes, and there is no transport like buses or vans, parents may not be willing to send their girls to school. Many families are too poor and unable to bear the cost of educating all their children. Boys may get preference in this situation. Many children also leave school because they are discriminated against by their teacher and classmates, just like Omprakash Valmiki was.

NCERT class - VII - Polity - KHAN Global Studies

By : Karan Sir

13:02

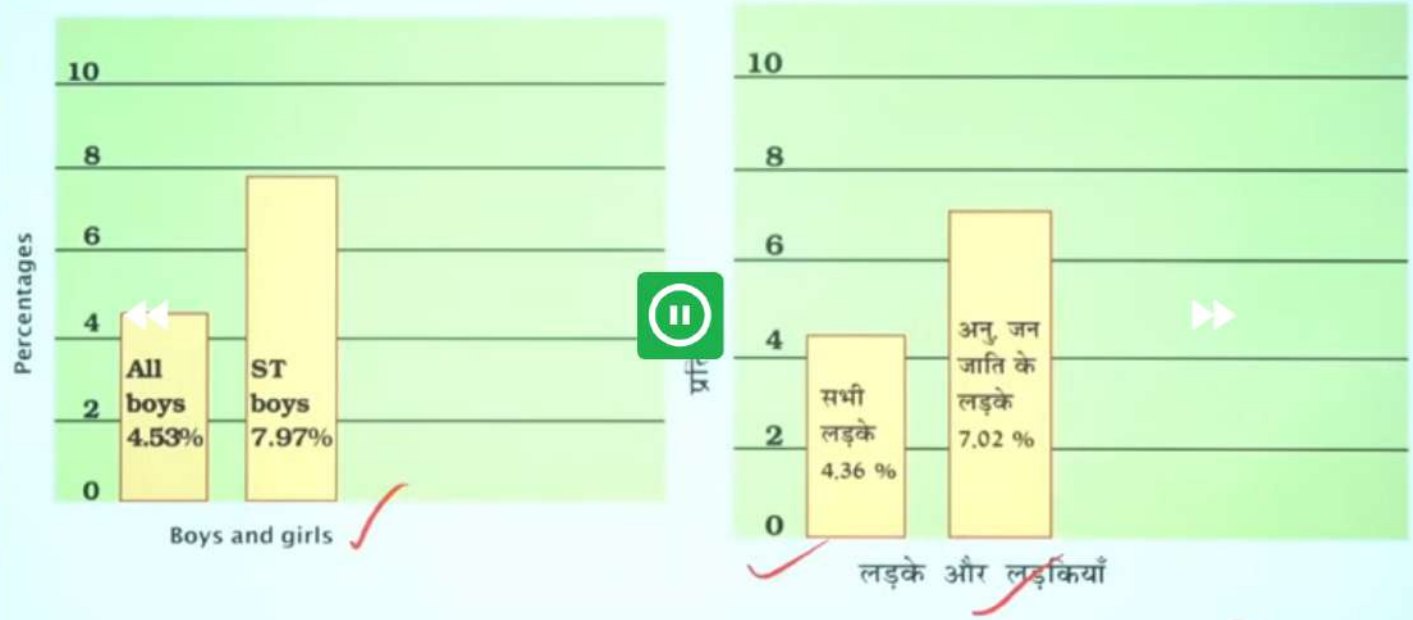

1:02:46 /1:31:51

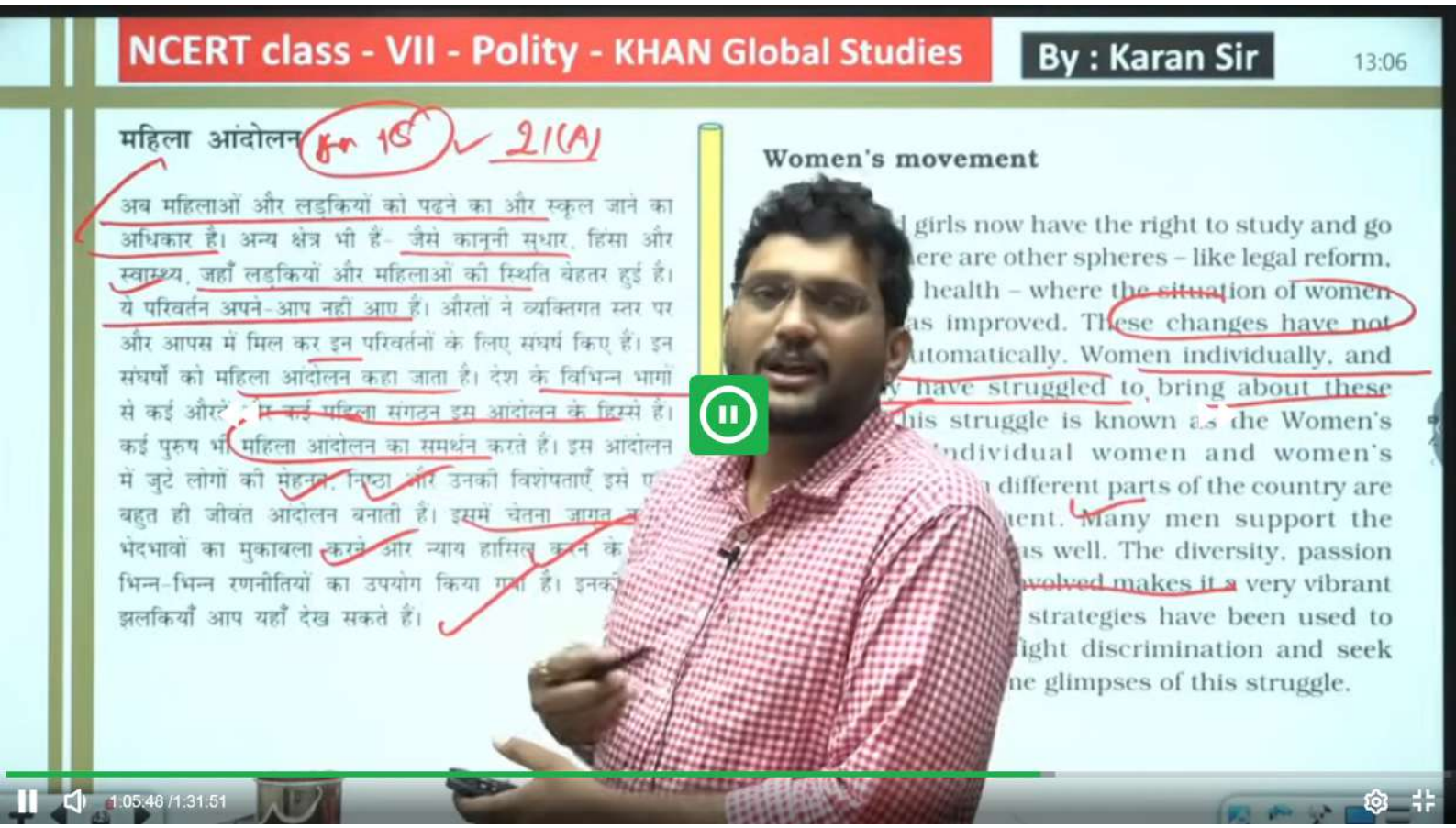
NCERT class - VII - Polity - KHAN Global Studies
By : Karan Sir
13:06
महिला आंदोलन
Art 15
21(A)
अब महिलाओं और लड़कियों को पढ़ने का और स्कूल जाने का अधिकार है। अन्य क्षेत्र भी हैं- जैसे कानूनी सुधार, हिंसा और स्वास्थ्य, जहाँ लड़कियों और महिलाओं की स्थिति बेहतर हुई है। ये परिवर्तन अपने-आप नहीं आए हैं। औरतों ने व्यक्तिगत स्तर पर और आपस में मिल कर इन परिवर्तनों के लिए संघर्ष किए हैं। इन संघर्षों को महिला आंदोलन कहा जाता है। देश के विभिन्न भागों से कई औरतें
कई पुरुष भी महिला आंदोलन का समर्थन करते हैं। इस आंदोलन में जुटे लोगों की मेहनत, निष्ठा और उनकी विशेषताएँ इसे
बहुत ही जीवंत आंदोलन बनाती हैं। इसमें चेतना जागृत
भेदभावों का मुकाबला करने और न्याय हासिल करने के
भिन्न-भिन्न रणनीतियों का उपयोग किया गया है। इनकी
झलकियाँ आप यहाँ देख सकते हैं।
Women's movement
girls now have the right to study and go
ere are other spheres – like legal reform,
health – where the situation of women
as improved. These changes have not
utomatically. Women individually, and
have struggled to bring about these
his struggle is known as the Women's
individual women and women's
different parts of the country are
ent. Many men support the
as well. The diversity, passion
volved makes it a very vibrant
strategies have been used to
ight discrimination and seek
ne glimpses of this struggle.
1:05:48 /1:31:51